नया ज्ञानोदय

जुलाई -सितंबर 2023
पृष्ठ 80
मूल्य : 50 रुपये

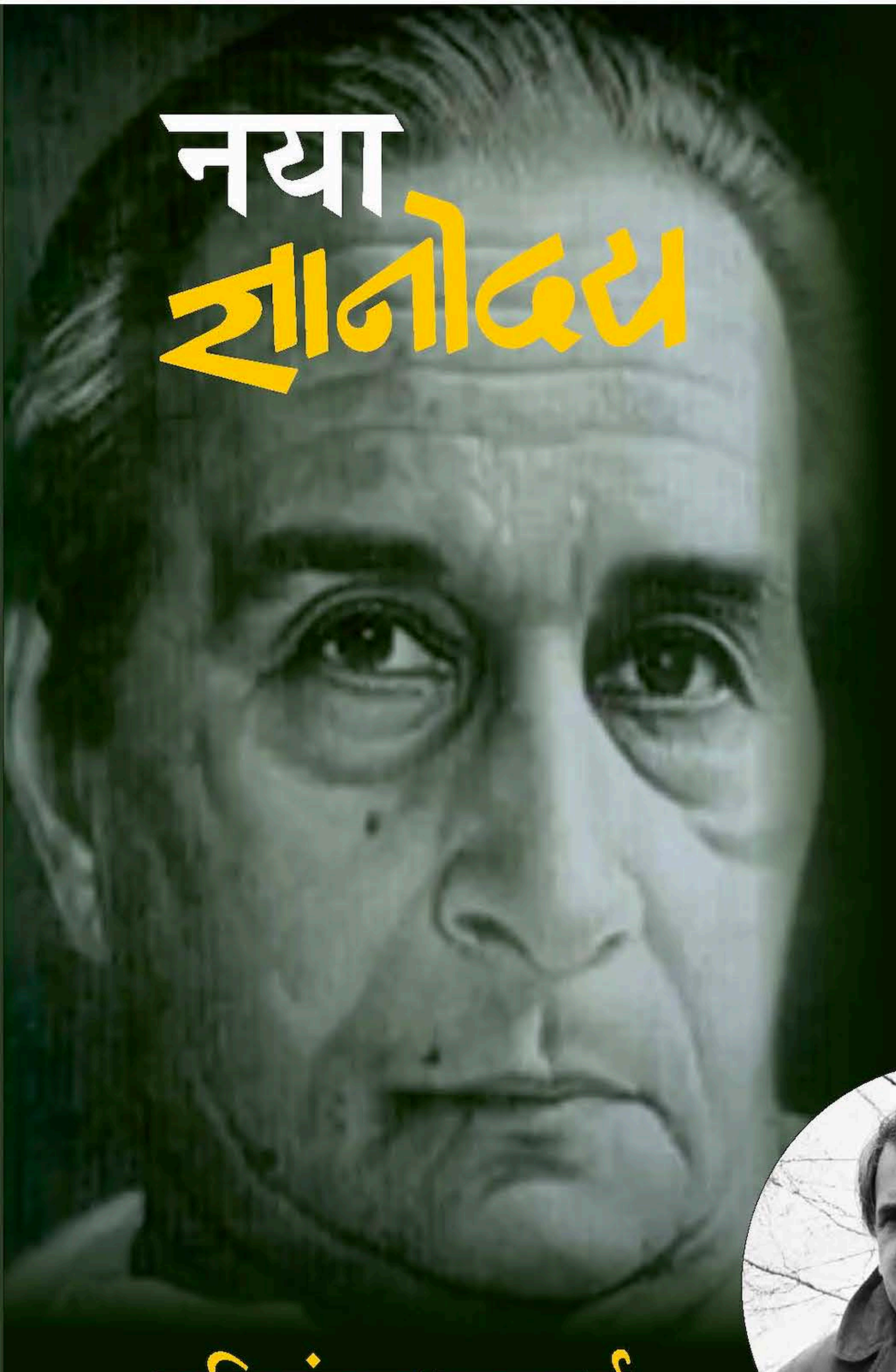

हरिशंकर परसाई
शताब्दी स्मरण

मिलान कुन्देरा
1929–2023

भारतीय ज्ञानपीठ

भारतीय ज्ञानपीठ

संस्थापक

श्रीमती रमा जैन
श्री साहू शांति प्रसाद जैन

नया ज्ञानोदय

साहित्य, समाज, संस्कृति और कलाओं पर केंद्रित

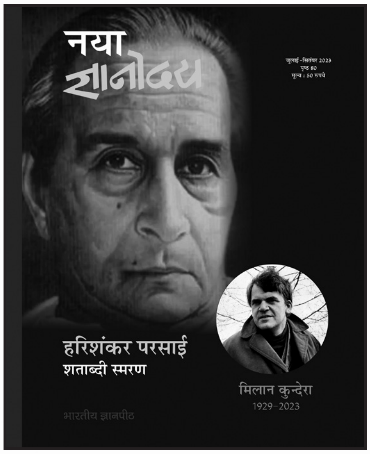

अंक : 223 | जुलाई-सितंबर 2023

सम्पादक
मधुसूदन आनन्द

सह-सम्पादक
महेश्वर, प्रभाकिरण जैन

साहू अखिलेश जैन
प्रबन्ध न्यासी, भारतीय ज्ञानपीठ

प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ
18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड,
नई दिल्ली-110 003
फोन : 011-2462 6467, 2469 8417, 4152 3423
ई-मेल : nayagyanoday@gmail.com
bjnanpith@gmail.com

वेबसाइट : www.jnanpith.net

Naya Gyanodaya
A Literary Quarterly Magazine
Editor : Madhu Sudan Anand
Language : Hindi
Published by **Bharatiya Jnanpith**
18, Institutional Area, Lodi Road,
New Delhi-110 003

मूल्य :
50 रुपये + 10 रुपये (डाक खर्च)

व्यक्तियों / संस्थाओं के लिए :
वार्षिक (4 अंक) : 240 रुपये (डाक खर्च सहित)

नया ज्ञानोदय रजिस्टर्ड पोस्ट से मँगाने हेतु डाक व्यय अतिरिक्त

नया ज्ञानोदय की ई-प्रति www.notnul.com पर उपलब्ध है।

शुल्क 'भारतीय ज्ञानपीठ (**Bharatiya Jnanpith**) के नाम से उपर्युक्त पते पर भेजें।

(केवल मनीआर्डर / चेक / बैंक ड्राफ्ट से)

© सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक, प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से भारतीय ज्ञानपीठ का सहमत होना आवश्यक नहीं। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अन्तर्गत विचारणीय।

आवरण व साज-सज्जा : महेश्वर, भीतरी रेखांकन : संदीप राशिनकर

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित साहित्यकार

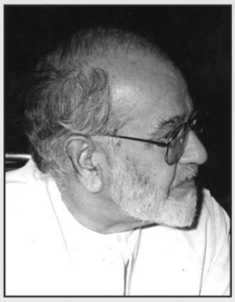
अज्ञेय

रामधारी सिंह दिनकर

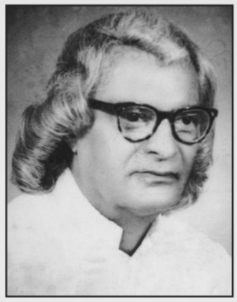
सुमित्रानन्दन पंत

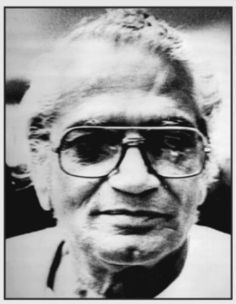
श्रीनरेश मेहता

महादेवी वर्मा

अमरकान्त

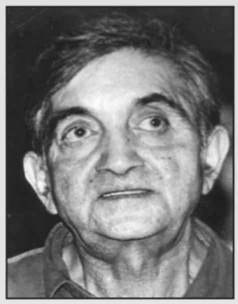
निर्मल वर्मा

केदारनाथ सिंह

कुँवर नारायण

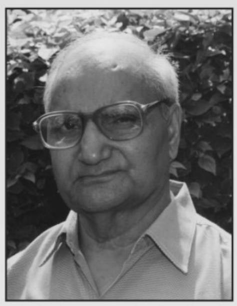
श्रीलाल शुक्ल

कृष्णा सोबती

www.jnanpith.net

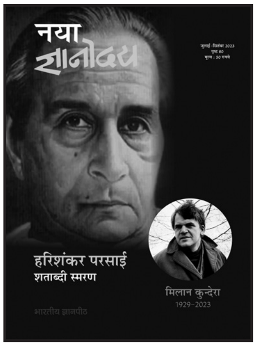

साहित्य, समाज, संस्कृति और
कलाओं पर केन्द्रित

अंक : 223
जुलाई-सितंबर : 2023
पृष्ठ : 84 (आवरण सहित)

www.jnanpith.net

अनुक्रम

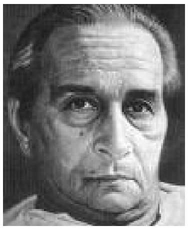

हरिशंकर परसाई

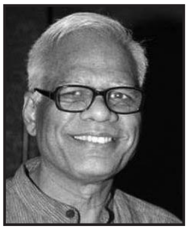

विष्णु नागर

महेश दर्पण

लीलाधर मंडलोई

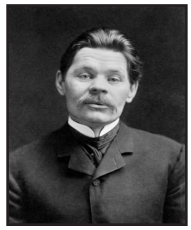

मैक्सिम गोर्की

गरिमा श्रीवास्तव

हरिशंकर परसाई : शताब्दी स्मरण
अपने परसाई : विष्णु नागर / 4

हरिशंकर परसाई के व्यंग्य
चूहा और मैं / 7
एक लड़की, पाँच दीवाने / 8
भोलाराम का जीव / 12
पहिला सफ़ेद बाल / 14
इंस्पेक्टर मातादीन चांद पर / 15
प्रेमचंद के फटे जूते / 19
सदाचार का तावीज़ / 21
विकलांग श्रद्धा का दौर / 23

परिचर्चा : हरिशंकर परसाई की प्रासंगिकता
ज्ञान चतुर्वेदी / 24
विष्णु नागर / 24
प्रेम जनमेजय / 25
सुभाष चंदर / 25
अर्चना चतुर्वेदी / 26

हरिशंकर परसाई का आलेख
कंटेम्पररी हिन्दी लिटरेचर : अज्ञेय का निबन्ध / 27

श्रद्धांजलि
एक निजी लेखक– मिलान कुंदेरा : गरिमा श्रीवास्तव / 30

कहानी
बिल्लियों वाली गली : महेश दर्पण/ 35
फांस : सुधांशु गुप्त/ 38
अंतिम प्रेम पत्र : विवेक आसरी / 41
मुलाकात की बारिश : रमेश कुमार 'रिपु'/ 44

कविता
देवेश पथ सारिया / 48

कोलंबिया की कहानी
चिड़िया : जॉन बेटर आर्मेला / 50

रूसी कहानी
उसका प्रेमी : मैक्सिम गोर्की / 51

संस्मरण
कुछ बीज हैं स्मृतियों के : लीलाधर मंडलोई / 54
वो बहन जब आई थी : प्रदीप कुमार / 60

साक्षात्कार
मीरां के प्रसंग में माधव हाड़ा से असीम अग्रवाल की बातचीत / 64

शिक्षा
अमेरिका में शिक्षक, भारत में शिक्षार्थी : अशोक ओझा / 67

समीक्षा
निराश और उदास समय की कहानियाँ : सुधांशु गुप्त / 69
संस्मरण की एक दुर्लभ कृतिः संग साथ : जीतेश्वरी / 71
चिरन्तन जिज्ञासा का कवि : डॉ. किरण मिश्रा / 74
स्वाभिमानी, साहसी, स्वतंत्रचेता स्त्री की आत्मकथा : शर्मिला जालान / 76
वर्तमान का आईना दिखाती कविताएं : नितिन सागर / 79

साहित्यिक समाचार
कोंकणी लेखक दामोदर मौजो को ज्ञानपीठ पुरस्कार : सुधांशु गुप्त/ 78

ज्ञान गरिमा के 79 वर्ष
भारतीय ज्ञानपीठ

अपने परसाई

विष्णु नागर

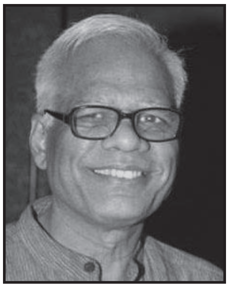

विष्णु नागर

सुपरिचित कवि विष्णु नागर का जन्म 14 जून 1950 को शाजापुर, मध्यप्रदेश में हुआ। आरंभिक शिक्षा-दीक्षा के बाद 1971 से दिल्ली में स्वतंत्र पत्रकारिता शुरू की। 'नवभारत टाइम्स', जर्मन रेडियो 'डोयचे वैले', 'हिंदुस्तान' दैनिक आदि से संबद्धता रही। बाद में 'कादंबिनी' के कार्यकारी संपादक रहे और कुछ समय तक दैनिक 'नई दुनिया' से भी संबद्धता रही। उन्होंने 'शुक्रवार' पत्रिका का भी संपादन किया। कविता की दुनिया में चार दशक से सक्रिय विष्णु नागर व्यंग्य और विडंबना के कवि तो हैं ही जीवन की संवेदना के विविध रंगों के भी कवि हैं।

उनके कई कविता संकलन, कई कहानी संग्रह और अनेक व्यंग्य संग्रह प्रकाशित हैं और उन्होंने आलोचना पर भी एक पुस्तक लिखी है। उनका एक उपन्यास भी प्रकाशित है।

मो. 9810892198

हरिशंकर परसाई ने अपने जीवन में करीब पचास साल तक लेखन किया और मेरी पीढ़ी को उन्हें पढ़ते-पढ़ते क़रीब पचास साल होने को आए हैं। याद आता है कि उनका व्यंग्य स्तंभ 'सुनो भई साधो' 1966-67 या सम्भवतः उससे भी पहले इन्दौर से प्रकाशित अखबार 'नई दुनिया' में पढ़ना शुरू किया था। बाद में 'धर्मयुग' के बैठे ठाले स्तंभ में भी उनके व्यंग्य पढ़ने को मिले। उनकी मृत्यु को भी अब लगभग तीन दशक होने वाले हैं। वे उन कुछ लेखकों में हैं, जिन्हें न केवल मैंने बल्कि शायद आप सबने भी बार-बार पढ़ा होगा। प्रेमचंद के बाद शायद वही ऐसे लेखक हैं, जिन्हें साधारण शिक्षितों ने भी बार-बार पढ़ा और आज तक पढ़ रहे हैं, जबकि इस बीच बहुत कुछ बदल चुका है और जो बदला नहीं है, उसके बदलने के आसार साफ़ दिखाई दे रहे हैं। यह उस लेखक के बारे में सच है, जो अपने लिखने की शाश्वतता में कतई विश्वास नहीं करता था, ऐसी बातों पर हंसा करता था, जो लिखा और मरा, इस बात में विश्वास करता था।

एक बार आपने नोट की हो शायद कि दो बड़े आलोचकों– विश्वनाथ त्रिपाठी और धनंजय वर्मा ने उन पर बहुत मेहनत और गम्भीरता से लिखा है मगर उनमें परसाई जी के प्रति केवल प्रशंसा भाव क्यों है, मैं इसे लेकर थोड़ा परेशान हुआ था। मैंने यह बात एक मित्र से साझा की। बाद में जब मैं परसाई जी की लगभग सारी रचनाओं को फिर से पढ़ गया तो मैंने खुद पाया कि मैं उनसे कहां अलग हूँ, हालाँकि मैं भूल से भी आलोचक नहीं हूँ। मेरे भीतर परसाई जी के प्रति केवल प्रशंसा भाव है। वैसे किसी भी लेखक को– चाहे वह कितना बड़ा क्यों न हो– देवता बनाना ठीक नहीं– और हर लेखक हर हालत में आलोच्य होता है, वेध्य होता है और उसे ऐसा होना ही चाहिए वरना पाठकों-आलोचकों में और भगवान और उनके भक्तों के बीच क्या फर्क रह जाएगा लेकिन कम से कम परसाई जी के मामले में ऐसा करने के लिए उनकी तमाम रचनाओं को सिर्फ इसी एक दृष्टि से पढ़ना कि जो भी हो, मुझे तो उनकी आलोचना ही करना है, तब शायद कुछ मिल जाए। यह जरूरी क्यों हो कि लेखक में जो सहज रूप से नहीं दिखाई दे रहा है, उसे कोई पाठक जबर्दस्ती देखे? और क्यों माना जाए कि परसाई जी की सीमाएँ देखने वाले कोई हैं नहीं, होंगे नहीं? उनकी दृष्टि सचमुच अगर कुछ ऐसा पकड़ पाए, जो मेरे जैसों की नजर से चूक गया है तो उससे सहमत हुआ जा सकता है। प्रेमचन्द को गुजरे आज सात दशक से अधिक हो चुके हैं मगर वह भी विवादों से नहीं बचे हैं। पहले कुछ लेखक-आलोचक उनकी रचनात्मक क्षमताओं की ऊँचाइयों पर शंका करते थे और अब दलित लेखकों का एक वर्ग– दलितों के प्रति उनकी सामाजिक दृष्टि का कटु आलोचक है। एक दलित लेखक तो इसे इस हास्यास्पद स्तर तक पहुँचा चुके हैं कि प्रेमचन्द की दलितों संबंधी प्रसिद्ध कहानियों के मुक़ाबले उन्हीं थीम पर, उन्हीं शीर्षकों से उन्होंने भी कहानियाँ लिखीं। उनके इस प्रयास को दलित लेखकों ने भी गम्भीरता से नहीं लिया। खैर यहाँ आशय यह नहीं है कि प्रेमचन्द की दलित लेखकों द्वारा की गयी सारी आलोचना को रद्द करना चाहिए। ऐसी बहुत-सी आलोचना के पीछे उनकी अपनी दृष्टि, जीवनानुभव हैं। आपत्ति उन्हें एक लेखक के रूप में पूरी तरह नकारने और प्रेमचन्द से अधिक खुद को महान बताने की मानसिकता से है। अपनी महानता, दूसरों को दो कौड़ी का सिद्ध करके स्थापित नहीं की जा सकती।